शरद् ऋतु में – राग पंचम एवं इसकी रागिनियाँ
वर्षा ऋतु में – राग मेघ एवं इसकी रागिनियाँ
हेमन्त ऋतु में – राग नारायण एवं इसकी रागिनियाँ

यद्यपि प्रस्तोता की इच्छानुरूप रागों का प्रयोग वर्जित नहीं है।

इस प्रकार दामोदर पंडितकृत संगीत दर्पण के द्वितीय अध्याय में राग की परिभाषा, राग के भेद, राग की जाति, 20 राग के अतिरिक्त, राग–रागिनी वर्णन, के अंतर्गत, शिवमत के राग–रागिनियाँ समय, भाषांग–रागांग उपांग, क्रियांग कंडारणा, ऋतु के वर्णन के बाद हनुमन्त की राग–रागनियाँ, रागार्णव मत से राग–रागनियों के बाद हनुमनन्त के छः राग एवं उनकी रागिनियों के लक्षण एवं ध्यान दिए गए है।

संदर्भः–

1. दामोदर पंडित, संगीत दर्पण, अध्याय– 02, श्लोक–02, पृ0–71
2. मंतग, वृहद्येशी, अध्याय–तृतीय
3. दामोदर पंडित, संगीत दर्पण, अध्याय–2, श्लोक–5
4. वही, पृ0– 72, श्लोक– 6
5. वही, श्लोक–9, पृ0– 73,
6. वही, श्लोक– 10, पृ0–73
7. वही, श्लोक– 11, पृ0–73
8. वहीं, श्लोक–13, पृ0–74
9. वहीं, श्लोक–14, पृ0–74
10. वहीं, श्लोक– 15, पृ0–74
11. वहीं, श्लोक– 16, पृ0– 75
12. वहीं, श्लोक– 17, पृ0–75
13. वहीं, श्लोक– 18, पृ0– 75
14. वहीं, श्लोक– 19, पृ0– 75
15. वहीं, श्लोक– 20, 21 पृ0– 75

*****

परोपकारिता एवं सह अवधारणा

डॉ. संजय कुमार दुबे*

व्यावसायिक व्यवहार, मददगार, साझा करना, बचाव करना, बचाव, दान, सहयोग करना, सहानुभूति आदि आदि विभिन्न शर्तें हैं, जो विभिन्न शब्द हैं, जो परोपकारिता के बहुत करीब और निकट लगते हैं और इसलिए जहाँ तक संभव हो इसे और ज्वलंत बनाना वांछनीय है।

व्यावसायिक व्यवहार को आमतौर पर ऐसे व्यवहार के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो दूसरे को लाभान्वित करता है या उसके सकारात्मक सामाजिक परिणाम होते हैं (स्टाब, 1978रू विस्पे, 1972) अभियोगात्मक शब्द असामाजिक के विपरीत है, जो आक्रामकता पर लागू होता है और अन्य रूप सामाजिक व्यवहार के नकारात्मक रूप हैं। परिणामों के संदर्भ में यह परिभाषा कुछ अपर्याप्त हो सकती है। जैसे–क्या हम अनायास ही प्राथमिक उपचार करते समय किसी दुर्घटना के शिकार व्यक्ति की हालत खराब कर देते हैं, क्या हमने अभियोग तरीके से काम किया है? इसके एवज में किसी का पक्ष लेने के लिए कोई पैसे दे सकता है। यह एक सकारात्मक सामाजिक परिणाम के रूप में कार्य करता है। लेकिन इसे रिश्वत नहीं कहा जायेगा बल्कि यह व्यावसायिक व्यवहार होगा? इस प्रकार, यह उपयोगी है, न केवल एक अधिनियम के परिणाम पर विचार करने के लिए बल्कि उस कार्य के अंतर्निहित उद्देश्यों के लिए भी। अभियोग व्यवहार का सबसे स्पष्ट उदाहरण वे हैं, जो परोपकारी शब्द की योग्यता रखते हैं। विशिष्ट व्यवहार, जिन्हें अभियोजन व्यवहार के रूप में देखा जा सकता है, वे हैं हस्तक्षेप, दान, शिष्टाचार, सहयोग, दान, उपहार, त्रिकोणीय मदद, बचाव, बलिदान, साझा करना और सहानुभूति।

मदद करने की भावना, जैसा कि इसके नामकरण से स्पष्ट है कि किसी अन्य व्यक्ति को कारण की परवाह किए बिना सहायता करना (सेवरी, एट. अल. 1976)। अपने पुरस्कार और लागत और सहायक के इरादे के अनुसार भाग लेने की आवश्यकता नहीं है। परोपकार उस मदद करने की भावना से इन मायनों में अलग होता है, जो जानबूझकर किया जाता है, अर्थात ऐसा इसलिए किया जाता है क्योंकि दूसरे व्यक्ति को इसकी आवश्यकता होती है। इस प्रकार, परोपकार मदद करने का एक विशेष मामला है।

***ग्राम–पुखरेरा, पो0– बिलासपुर, थाना– मैरवा, जिला– सीवान**

एक अन्य प्रमुख अभियोजन सहयोग व्यवहार है। सहयोग एक ऐसा अभियोग व्यवहार है, जो पारस्परिक लक्ष्यों की प्राप्ति में योगदान देता है (रेवेन एंड रुबिन, 1976)। परोपकार उस सहयोग से अलग है, हालांकि दोनों में प्रतिभागियों के लिए लागत शामिल हो सकती है, निजी लाभ की उम्मीद के बिना परोपकारिता की जाती है। लेकिन उनके पास भी कुछ सामान्य है। परोपकार किसी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकता है, और एक सहकारी संबंध का पालन कर सकता है। इसी तरह सहकारी व्यवहार, व्यक्तिगत लाभ के लिए शुरू किया, अंततः निकटता का उत्पादन कर सकता है और परोपकारिता का कारण बन सकता है।

एक और प्रासंगिक अवधारणा जिसे स्पष्टीकरण की आवश्यकता है, वह है सहानुभूति। परोपकारी और सहानुभूतिपूर्ण कार्य प्रदान करते हैं, जो सामाजिक व्यवहार पर आंतरिक नियंत्रण के अधिग्रहण और रख–रखाव में सहानुभूति और विकराल अनुभव की भूमिका के शायद सबसे दिलचस्प उदाहरण हैं। एक अधिनियम को परोपकारी के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जब एक वैकल्पिक अधिनियम की प्राथमिकता में, उसकी पसंद, कम से कम आंशिक रूप से अपेक्षित परिणामों से निर्धारित होती है, जो अभिनेता के बजाय एनोट व्यक्ति को लाभान्वित करेगी। एक्टर के लिए किसी भी मजबूत परिणाम की अनुपस्थिति परोपकारी व्यवहार के लिए एक सामान्य रूप से मानदंड है। इस दृष्टिकोण से, यह मानना आवश्यक है कि परोपकारी कृत्यों को दूसरे के लिए उनके परिणामों के भावात्मक मूल्य के माध्यम से प्रबलित किया जाता है, इसके बावजूद कि उनके पास अभिनेता के लिए सकारात्मक परिणाम हो सकते हैं या उनके सीधे विपरीत परिणाम भी हो सकते हैं। वास्तव में, व्यवहार पर उदासीन या विकराल नियंत्रण वास्तविक परोपकारी कृत्य की एक शर्त है। सहानुभूतिपूर्ण या विचित्र अनुभव को सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार की एक शर्त के रूप में अनुमान लगाया जाना चाहिए, क्योंकि एक व्यवहार वास्तव में केवल इस हद तक सहानुभूति है कि यह दूसरे लोगों को वास्तविक या संभावित संकट के प्रति अभिनेताओं की स्नेहपूर्ण प्रतिक्रिया से प्रेरित है। सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार की अवधारणा के लिए स्नेहक आधार परोपकारी व्यवहार की अवधारणा के लिए संबंधित आधार से कम व्यापक है, क्योंकि सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार में जोरदार या विकारी संकट के प्रतिवर्ती स्नेह निर्धारक निहित है। सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार इस हद तक परोपकारी हो सकता है कि इसके अपेक्षित सुदृढ़ीकरण के परिणाम सहानुभूति या विकराल संकट को कम करने के लिए सीमित हों, जो उस व्यक्ति को अनुभव होगा, जब कोई अन्य व्यक्ति राहत से या दुःख से सुरक्षित होगा। हाल के प्रयोगों से पता चलता है कि ऐसे परोपकारी घटकों का प्रदर्शन सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार है (बुस, 1977 : शोपलर और बैटसन, 1965)।

परोपकार के सिद्धांत–मानव प्रकृति के अलग–अलग विचारों ने परोपकारिता के विभिन्न सिद्धांतों को उत्पन्न किया है, जिन्हें यहाँ पर एक संक्षेप विवरण की आवश्यकता है। उनमें समाजशास्त्रीय शामिल हैं। समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक–मनोवैज्ञानिक सिद्धांत।

परोपकार का समाजशास्त्रीय सिद्धांत शब्द 'परोपकारिता' समाजशास्त्री अगस्त कॉम्टे द्वारा गढ़ा गया था। उन्होंने कहा, "VIVE POUR AUTURI" जिसका अर्थ है कि दूसरों के लिए समान। जॉन स्टुअर्ट मिल और हर्बार्ट स्पर्नेर जैसे दार्शनिकों और लेखकों ने इस अवधारणा को उत्सुकता से अपनाया और इसे बहुत ही शानदार ढंग से इस्तेमाल किया। समाजशास्त्री एनिल दुरकेहिम ने अपने विश्व प्रसिद्ध मोनोग्राफ "Le Suicide (1987) में अपनी धारणा में आत्महत्या की तुलना में अहंकारी और परोपकारी विचारों की तुलना पर उन्होंने 1902–1903 में परोपकारिता और अहंकार की सामान्य अवधारणाओं पर कुछ प्रकाश डाला। इसके बाद, कैप्टन एल के तहत व्याख्यान प्रकाशित किए गए थे। 1925 में शिक्षा नैतिकता और इसका अंग्रेजी संस्करण 1961 में सामने आया। अहंकार और परोपकारिता का उनका विश्लेषण संस्थागत परोपकार की अवधारणा की आधारशिला प्रदान करता है।

समाजशास्त्रीय सिद्धांतवाद में समाजशास्त्र परोपकारी व्यवहार और मानव प्रकृति के लिए एक और दृष्टिकोण है। जैसा कि पेपिशन (1976) ने जोर देकर कहा, ''सामाजिक मनोविज्ञान अन्य सामाजिक विज्ञानों और जीव विज्ञान के साथ करीबी कामकाजी संबंधों में एक बड़े जैव–सांस्कृतिक संदर्भ में है।'' यद्यपि अंतर–विषयगत रूप से बनाए गए प्रतीकात्मक और मानक अर्थों के हमारे व्यवहार के लिए महत्व को लगातार याद किया जाना चाहिए, इसलिए हमारे विकासवादी इतिहास और हमारे अतीत और वर्तमान भौतिक वातावरण के कारण का प्रभाव होना चाहिए। एक मनोविज्ञान जो मानव जीव विज्ञान की उपेक्षा करता है, हमारे सामाजिक संबंधों और संबंधों के सभी पहलुओं की व्याख्या करने की उम्मीद नहीं कर सकता है, क्योंकि हम नहीं हैं। एक मनोविज्ञान जो मानव जीव विज्ञान की उपेक्षा करता है, क्योंकि 'सामाजिक व्यवहार के जैविक बेसिन का व्यवस्थित अध्ययन' (Willmon 1975) यह सामाजिक व्यवहार के लिए आनुवांशिक बनाने की कोशिश करता है क्योंकि यह उन प्रजातियों से बना है, जो उम्र के साथ उनके विकास से प्रभावित हैं। विकासवादी सिद्धांत की अक्सर उपेक्षित विशेषता पर समाजशास्त्र नए सिरे से तनाव से जुड़ा हुआ है, जैसा कि डार्विन (1968) ने स्पष्ट रूप से यह सुझाव दिया कि प्राकृतिक चयन की प्रक्रिया के माध्यम से, प्राणियों के लिए परोपकारिता उनकी प्रजातियों के अस्तित्व में योगदान कर सकती है। डार्विन की काल्पनिक धारणा के अस्तित्व से पता चलता है कि यदि जीन जीवित

रहने में योगदान करते हैं और थन व्यक्ति को कम ''फिट व्यक्तियों की तुलना में अधिक बार प्रजनन करने की अनुमति देते हैं तो वे प्रजातियों की भावी पीढ़ियों में अधिक सामान्य हो जाएंगे। लेकिन जीन कैसे किसी व्यक्ति को परोपकारी होने की भविष्यवाणी कर सकते हैं।'' किसी भी आवृत्ति के साथ उत्तीर्ण होने पर जब परोपकारी दूसरों के लिए अपने जीवन को खतरे में डालते हैं, तो इस समय पर समाजशास्त्री धारणा रिश्तेदारी चयन 'की अवधारणा को पेश करते हैं, जो बताते हैं कि विकास क्या मायने रखता है जीन का अस्तित्व, जो किन (रिश्तेदारों) के साथ साझा किया जाता है, बजाय अस्तित्व के। व्यक्तियों का (ब्राउन और हैमिल्टन, 1975) परिजन और व्यक्तियों के अंतिम स्वार्थ को मानते हैं। समूह दृष्टिकोण व्यक्ति को दीर्घकालिक लाभ की भविष्यवाणी करता है।

सामाजिक मनोवैज्ञानिक सिद्धांत का निरूपण करते हुए कैंपबेल ने विशेष रूप से सामान्य और परार्थवाद में व्यवहार संबंधी द्वंद्ववाद के जैविक और सामाजिक विकास दोनों पर असर डालने वाले नए तथ्य और सिद्धांत को मजबूत करने का प्रयास किया। कई व्यवहार संबंधी विसंगतियों के लिए दो प्रणालियाँ एक–दूसरे का समर्थन करती हैं। मैकाले और बर्कविट्ज जैसे सामाजिक मनोवैज्ञानिकों के शोध में परोपकारिता पर एक विकास हुआ है जिसे ष्इक्विटी सिद्धांतष् के रूप में नामित किया गया है। मानव विज्ञान और समाजशास्त्र में सामाजिक–विनिमय सिद्धांत पर एलेन बेर्शीद और अन्य लोग षरिलेशनशिपष् में लिम के बीच सामाजिक बातचीत के विभिन्न तरीकों के लिए इक्विटी सिद्धांत का उपयोग किया है। इक्विटी सिद्धांत को कई सिद्धांतों के एक प्रयास संश्लेषण के रूप में परिभाषित किया गया है, जो व्यक्तियों की भविष्यवाणी करने के लिए डिजाइन किए गए हैं। यह अनुभव करें कि उनके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार किया जाता है और जब वे खुद को अन्यायपूर्ण संबंध में घिनौना पाते हैं, तो वे कैसे प्रतिक्रिया देंगे। (वाल्स्टर, बर्शीद और वाल्टस्टर, 1973)

संबंधों के रूप में परिभाषित समानता, जिसमें पर्यवेक्षक, चाहे वह संबंध के पक्ष या बाहरी हों। इस बात पर विश्वास करें कि रिश्ते के सभी लोग इससे ष्समान रिश्तेदार परिणाम प्राप्त करते हैं। उनकी धारणाएं भिन्न हो सकती हैं लेकिन यह असमान संबंधों को प्रभावित नहीं करती हैं जो बातचीत में शामिल व्यक्तियों को परेशान करती हैं। नतीजतन, असमान रिश्ते एक अर्थ को स्थापित करने से उस संकट से छुटकारा पाने की कोशिश करेंगे। इक्विटी की, या तो वास्तव में बदल रही है, अपने स्वयं के या अन्य इनपुट और परिणाम या उचित रूप से उन इनपुट या परिणामों को गलत तरीके से बदलकर।

वाल्स्टर, बर्शीइड और वाल्स्टर लाभार्थियों और लाभार्थियों के बीच सामाजिक संपर्क को फिर से संगठित करते हैं, जो कि शोषणकर्ताओं और पीड़ितों के मामले में कथित इक्विटी के यूरोपिलियम की ओर बढ़ते हैं। नतीजतन, दोनों रिलेशनशिप का एक ही शब्दों में विश्लेषण किया जा सकता है। आइए हम मान लें कि शुरू में प्रतिभागी एक समान रिश्ते में हैं। तब पीड़ित की तरह लाभकारी, अब एक असमान और लाभदायक–संबंध में भागीदार है। इक्विटी सिद्धांत हमें यह उम्मीद करता है कि लाभार्थी और प्राप्तकर्ता, जैसे हानि कर्ता और पीड़ित को, अस्पष्ट असुविधा का अनुभव करना चाहिए जब उन्हें पता चलता है कि वे एक समान रिश्ते में भाग ले रहे हैं।

सामाजिक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण स्थितिजन्य कारकों पर जोर देता है जो जवाब देने का प्रयास करते हैं कि लोग दूसरों की मदद क्यों करते हैं। इसने परोपकारिता के महत्वपूर्ण सामाजिक–मनोवैज्ञानिक मॉडलों को प्रस्तुत किया, जिन्हें निम्नानुसार प्रस्तुत किया जा रहा है –

(i) परोपकारिता का लेटन और डार्ली मॉडल
(ii) पिल्विन मॉडल
(iii) मदद के प्रेरक और मध्यस्थ

सामाजिक व्यवहार अलगाव में मौजूद नहीं है। यह कई स्थितिगत कारकों से प्रभावित होता है। यहाँ मुद्दा यह है कि क्या व्यक्तित्व की मदद करने जैसी कोई चीज मौजूद है। चाहे विशेषताएं हों या लक्षण जो सहायकों को अलग करते हैं। सवाल यह उठता है कि क्या कुछ लोगों के पास ऐसे गुण हैं जो उन्हें अन्य की तुलना में अच्छे सामरी होने की अधिक संभावना रखते हैं? अच्छे समरिटन्स, हेल्पर्स या लाभार्थी सभी स्थितियों में नहीं मिल सकते हैं।इसके अलावा यह उन लक्षणों को खोजने में व्यर्थ हो सकता है जो उन लोगों से अलग–अलग हैं जो जरूरत पड़ने पर दूसरों की मदद करने के लिए नहीं होते हैं।

कई अन्य लोगों ने मदद और आत्म–सम्मान, सहानुभूति और नैतिक विकास के स्तर के बीच सकारात्मक संबंध पाया है। यह यहां जोड़ा जा सकता है कि प्रत्येक मदद की स्थिति थोड़ी अलग रुचियों, आवश्यकताओं और अभिविन्यास को उत्तेजित करती है। इसलिए, मदद करने का पूर्वानुमान केवल व्यक्तित्व और स्थिति के बीच बातचीत के ज्ञान से संभव होना चाहिए, न कि केवल व्यक्तित्व से। स्थितिजन्य कारकों की भूमिका के बावजूद, निश्चित रूप से व्यक्तित्व की कुछ विशिष्ट विशेषताएं हैं, जो मानव जाति की भलाई के लिए पूरे जीवन को समर्पित करने के लिए बनाती हैं। यह कहने के लिए कि ये विशिष्ट विशेषताएं व्यक्तित्व के ऐसे स्पर्श को मजबूर करती हैं, अर्थात 'परोपकारी व्यक्तित्व को परोपकारी व्यवहार के माध्यम से पीड़ित जन की बेहतरी के लिए सब कुछ करना है।

और महिलाओं के खिलाफ कोरिया के गंभीर भेदभाव का मुकाबला करने के लिए।

छठी, घाना की एनी जीएज, अफ्रीका में एक अग्रणी महिला नेता को लगता है कि वह ष्अपने पक्ष को कम नहीं होने दे सकती हैं। वह अपने मूल देश की पट्टी में भर्ती होने वाली पहली महिला थीं। विश्व पटल पर उन्हें पहचान मिली है। दाएं ओ.टी. महिलाओं के लिए एक चौंपियन। उनका मानना है कि ष्सभी मनुष्य ईश्वर की छवि में बने हैं और यह नस्लम को पाप बनाता है।

पश्चिम की इन महान महिलाओं के अलावारू भारतीय पैनोरमा में परोपकारी व्यक्तित्वों की एक लंबी सूची है, जिन्होंने अपने जीवन–काल के दौरान पीड़ित मानवता के लिए बहुत कुछ किया। इस श्रृंखला में, दार्शनिकों, महान विचारकों, सामाजिक कार्यकर्ता के नाम का उनके विशाल योगदान के लिए जिम्मेदार है। महात्मा बुद्ध, महावीर, राजा राम मोहन राय, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, और इसी तरह के महान नामों को रेखांकित किया जाना है। हाल ही में 1996 के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित डॉ। महाश्वेता देवी का नाम परोपकारी व्यक्तित्व के पैनल में जोड़ा जा सकता है जो मुख्य रूप से समाज के वंचित वर्ग की सेवा कर रहे हैं।

इन लोगों ने पाया कि जिन लोगों को सामाजिक अनुमोदन की आवश्यकता अधिक थी, उन्होंने कुछ शर्तों के तहत अधिक परोपकारी व्यवहार दिखाया। सेक्स–अंतर पर निष्कर्ष और सामाजिक अनुमोदन के साथ भी उसी तरह की व्याख्या करना। पुरुष अक्सर आपातकालीन परिस्थितियों में अधिक मदद करते हैं, खासकर जब स्थिति को प्रत्यक्ष, मुखर, पारंपरिक रूप से पुरुष भूमिकाओं से जुड़ा हुआ कहा जाता है। यदि आवश्यक सहायता में किसी खोए हुए बच्चे को सम्मिलित करने की आवश्यकता हो, तो महिलाएं शायद अधिक मदद करें। इस प्रकार यह सुझाव दिया जा सकता है कि किसी व्यक्ति की स्थिति की भावनाओं के कारण परोपकारी व्यवहार भावना, भावनात्मक उत्तेजना पुर्व संज्ञान से प्रभावित होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. जे. एच. ब्रायन दृ जर्नल ऑफ सोशल इश्यूज
2. ए. सी. बोंक्वेट दृ कम्पेरेटिव रिलीजन
3. ए. बुस दृ साईंकोलोजी रू मैंन इन पेरस्पेक्टिव
4. भगवन दस दृ एसेंसिअल यूनिटी ऑफ ऑल रिलीजन
5. एस. जे. कोर्ची–जर्नल ऑफ एक्सपेरिमेंटल साईंकोलोजी

*****

विद्यापति के गीतिकाव्य में बिम्बों का वर्गीकरण

डॉ0 शकुन्तला कुमारी *

संवेदनाओं या इन्द्रियानुभूतियों के परिप्रेक्ष्य में काव्यगत बिम्बों का विवेचन अब प्रायः स्वीकार्य हो गया है।[1] अध्येताओं ने चूँकि ऐन्द्रियता को आधार मानकर काव्य भाषागत मूर्तता के मूल्यांकन को बहुत दूर तक मान्यता दे दी है, अतः पाँच ''विषयों'' एवं उनसे सम्बद्ध पंचेन्द्रियों–आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा को दर्षष्टिपथ में रखते हुए बिम्बों को पाँच वर्गों में विभक्त किया गया है।[2] रूप, शब्द, गन्ध, रस एवं स्पर्श से संबद्ध संवेदनाएँ क्रमशः नेत्र, कान, नाक, रसना या जिह्वा तथा त्वचा से जुड़ी हैं। उक्त विषयों और इन्द्रियों की पारस्परिक निर्भरता सर्वज्ञात है। यह आपसी लगाव बिम्बों के निम्नलिखित पाँच वर्गों का निर्धारण करता हैः–

(क) रूप बिम्ब या दृष्टि बिम्ब, (ख) शब्द–बिम्ब या ध्वनि–बिम्ब,
(ग) गन्ध–बिम्ब, (घ) रस बिम्ब या स्वाद बिम्ब और
(ङ) स्पर्श–बिम्ब।

यहाँ उपर्युक्त वर्गीकरण को ही आधार मानकर विद्यापति के गीति–काव्य में निहित बिम्बों के वैविध्य पर प्रकाश डाला जायेगा। ''पदावली'' में यथानिर्दिष्ट पंचविध बिम्बों की विद्यमानता है।

इनके अन्वेषण, श्रेणीकरण और संयोजन से विद्यापति के पदों की ऐन्द्रिय प्रकृति का सम्यक् ज्ञान पाया जा सकता है।

(क) रूप–बिम्ब या दृष्टि–बिम्ब :– गीतिकार विद्यापति में रूप–बिम्बों का आधिक्य है। इस प्राचुर्य से पता चलता है कि कवि की दृष्टि जीवन–जगत् के पर्यवेक्षण में पट है। पर्यवेक्षणगत इस क्षमता का ही परिणाम है कि विद्यापति के पदों में लौकिक सौन्दर्य के जीवन्त चित्र मिलते हैं। उक्त सौन्दर्य के निरीक्षण का प्राथमिक कार्य आँखों के द्वारा सम्पन्न होता है। अतः यह अस्वाभाविक नहीं है कि कवि ने अनेकत्र स्वयं नेतेन्द्रिय को ही कई छवियों में लपेट कर बिम्बधर्मिता प्रदान की है।

विद्यापति के गीतिकाव्य में नेत्रगत बिम्बों का बाहुल्य है। कवि ने आँखों के चित्रण में अपनी पर्यवेक्षण–शक्ति–द्वारा परंपरागत वर्णनों को अभिनव आयाम देने में सफलता पाई है। आँखों के आकार, वर्ण, चांचल्य, आंतरिक भाव आदि के निरूपण में उनके पद रूढ़ियों से आगे जाकर स्वानुभूत बिम्बों की सर्षष्टि करते हैं।

***उ0मा0 शिक्षिका (हिन्दी) चैपमैन राजकीय बालिका, +2 उ0मा0वि0, मुज0।**